गुनाहों से नजात कैसे मिल सकती है

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

गुनाह से नजात कैसे मिल सकती है?

(पाप से मुक्ति कैसे प्राप्त हो सकती है?)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : गुनाह से नजात (मुक्ति) कैसे मिल सकती है?
Name of book : Gunah Se Najaat Kaise Mil Sakti hai?
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद
मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad
Masih Mouood Alaihissalam
अनुवादक : डॉ अन्सार अहमद, पी एच. डी., आनर्स इन अरबिक
Translator : Dr Ansar Ahmad, Ph. D, Hons in Arabic
टाईपिंग, सैटिंग : आसमा तय्यबा
Typing Setting : Asma Tayyaba
संस्करण तथा वर्ष : प्रथम संस्करण (हिन्दी) मई 2018 ई०
Edition. Year : 1st Edition (Hindi) May 2018
संख्या, Quantity : 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

व अला अब्दिहिल मसीहिल मौऊद

गुनाह से नजात (मुक्ति) कैसे मिल सकती है?

इस पुस्तक में हमारा यह इरादा है कि संसार को दिखाएं कि हमारा यह युग अपनी भौतिक अवस्था की दृष्टि से जितनी उन्नति कर गया है उतनी ही अपनी रूहानी अवस्था की दृष्टि से अवनति में है यहां तक कि रूहों में यह बर्दाशत ही नहीं रही कि वह पवित्र सच्चाइयों को छू भी सकें बल्कि मनुष्य पर एक ध्यानपूर्वक दृष्टि डालने से सिद्ध हो रहा है कि गुप्त तौर पर एक भारी आकर्षण उन को नीचे की ओर खींच रहा है और वे हर पल एक गढ़े की तरफ हरकत कर रहे हैं। जिसे दूसरे शब्दों में "अस्फ़लुस्साफ़िलीन" कह सकते हैं और योग्यताओं पर एक ऐसा इन्क़िलाब आ गया है कि वे ऐसी चीज़ों की सुन्दरता पर बहुत प्रशंसा कर रहे हैं जो रूहानियत की दृष्टि से बहुत घृणित और कुरूप हैं। प्रत्येक अन्तर्आत्मा (कान्शंस) महसूस कर रही है कि एक आकर्षण उस को नीचे की तरफ ले जा रहा है और उन्हीं आकर्षणों के विनाशकारी प्रभावों से एक संसार तबाह हो गया है। पवित्र सच्चाइयों को हंसी और ठट्ठे से देखा जाता है और वास्तव में खुदा की ओर हो जाने को एक मूर्खता समझा जाता है समस्त लोग जो पृथ्वी पर हैं पूर्णत: संसार पर नतमस्तक दिखाई देते हैं जैसे एक गुप्त आकर्षण शक्ति से असमर्थ और विवश हो रहे हैं। यह वही बात है जो हम पहले लिख आए हैं कि संसार का समस्त कारोबार आकर्षणों पर ही चलता है। जिस पहलू में विश्वास की शक्ति अधिक होती है वह उस दूसरे पहलू को अपनी ओर खींच लेती है और

चूंकि यह फिलास्फी बहुत ही सही है कि एक आकर्षण को केवल वह आकर्षण रोक सकता है जो उस की अपेक्षा बहुत ज़बदरदस्त और शक्तिशाली हो। इसलिए यह संसार जो इस घटिया आकर्षण से प्रभावित हो कर नीचे की ओर खींचा जा रहा है इस का ऊपर की ओर मुंह करना बिल्कुल निराशाजनक है जब तक कि ऐसा विरोधी और शक्तिशाली आकर्षण आकाश से पैदा न हो जो विपरीत पहलू के विश्वास को बढ़ा दे। अर्थात जैसा कि एक निश्चित दृष्टि से सम्बन्धित कामवासना संबंधी दुराचारों में लाभ और आन्नद महसूस हो रहे हैं उन से बढ़ कर रहमानी आदेशों में लाभ दिखाई दें और विश्वास की दृष्टि से बुराई को करना मरने के बराबर दिखाई दे जो दिल को पकड़ ले और यह विश्वास का प्रकाश केवल आकाश से उस सूर्य के द्वारा आता है जो समय का इमाम होता है। इसलिए इस इमाम को न पहचानना मूर्खता की मौत मरना है। जो व्यक्ति कहता है कि मैं उस सूर्य से प्रकाश प्राप्त करना नहीं चाहता वह ख़ुदा के जारी कानून को तोड़ना चाहता है। क्या संभव है कि सूर्य को बिना आंखें देख सकें? यद्यपि आंखों में भी एक प्रकाश है परन्तु सूर्य का मुहताज। सूर्य वास्तविक प्रकाश है जो आकाश से आता और पृथ्वी को प्रकाशित करता है और आंखें उस के बिना अंधी हैं। और जिस व्यक्ति को उस आकाशीय आकर्षण के माध्यम से उस नेकी की तरफ आकर्षण पैदा होगा और उस आकाशीय आकर्षण और पृथ्वी के आकर्षण में लड़ाई पैदा होना एक स्वाभाविक बात है क्योंकि इस स्थिति में एक आकर्षण नेकी की तरफ खींचेगा और एक बुराई की ओर, और एक पूरब की ओर धक्का देगा और एक पश्चिम की ओर और दोनों का परस्पर टकराना उस समय बहुत ख़तरनाक होगा जबकि दोनों में अत्यधिक श्रेणी के आकर्षण मौजूद होंगे जिन का संसार की अत्यधिक उन्नति पर मौजूद न

होना एक आवश्यक बात है। तो जब तुम देखो कि पृथ्वी ने अत्यधिक उन्नति कर ली है तो समझ लो कि यही दिन आकाशीय उन्नति के भी हैं और विश्वास कर लो कि आकाश पर भी एक रूहानी उन्नति है और वहां भी एक आकर्षण पैदा हो गया है जो पृथ्वी के आकर्षण से लड़ना चाहता है। तो ऐसे दिन बहुत भयावह हैं जब कि पृथ्वी लापरवाही और बुराई में चरम सीमा तक उन्नति कर जाए। क्योंकि रूहानी लड़ाई के लिए वही वादे के दिन हैं जिन को नबियों ने भिन्न भिन्न प्रकार के रूपकों में वर्णन किया है तथा कुछ ने उसे इस उदाहरण में प्रस्तुत किया है कि यह आकाशीय फ़रिश्तों और ज़मीनी शैतानों की एक अन्तिम लड़ाई है जिस पर इस संसार का अन्त होगा। और कुछ ने अपनी अनभिज्ञता और मूर्खता से इस लड़ाई को एक भौतिक लड़ाई समझ लिया है जो तलवार और बन्दूक से होती हैं। परन्तु वे लोग गलती पर हैं और अपनी घटिया बुद्धि और मूर्खता से रूहानी युद्ध को भौतिक युद्ध की तरफ खींच कर ले गए हैं। अतः इन दिनों पृथ्वी के अंधकार और आकाश के प्रकाश का एक अन्तिम युद्ध है। आदम से लेकर हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक ख़ुदा के समस्त पवित्र नबी इस युद्ध की तरफ संकेत करते आए हैं। और इस युद्ध के सेनापतियों के दो अलग नाम रखे गए हैं। एक सच्चाइयों को छुपाने वाला, दूसरा सच्चाइयों को व्यक्त करने वाला या दूसरे शब्दों में यह वर्णन किया गया है कि आकाश से नूरानी फ़रिश्तों के साथ उतरने वाला और मीकाईल का द्योतक तथा एक पृथ्वी से समस्त शैतानी अंधकारों को लेकर प्रकट होने वाला और इब्लीस (शैतान) का द्योतक होगा। अब जब कि हम देखते हैं कि ज़मीनी सेनाएं ख़ूब तैयार हैं और वह अच्छी तरह से हथियार बंद होकर खड़ी हैं और अपना कार्य कर रही हैं बल्कि बहुत कुछ कर भी चुकी हैं तो स्वाभाविक तौर पर

यह नेक इच्छा पैदा होती है और सही विवेक गवाही देता है कि आकाशीय सरकार भी इन तैयारियों से लापरवाह नहीं है। उस सरकार की आदत कुछ ऐसी है कि दिखावटी शोर और कोलाहल को पसन्द नहीं करती और वह बहुत कुछ कारवाइयां अन्दर ही अन्दर कर लेती है और लोगों को ख़बर भी नहीं होती। तब आकाश पर एक निशान प्रकट होता है और पृथ्वी पर एक मीनार प्रकाशमान तथा बहुत ही सफ़ेद और वह आकाशीय प्रकाश मीनार पर गिरता है और फिर वह मीनार समस्त संसार को प्रकाशमान करता है। यह संक्षिप्त वाक्य व्याख्या चाहता है और व्याख्या यह है कि ख़ुदा तआला का रूहानी सिलसिला यद्यपि भौतिक सिलसिले के बिल्कुल अनुकूल है परन्तु कुछ बातों में इसमें वह अदभुत गुण पाए जाते हैं कि जो भौतिक सिलसिले में स्पष्ट तौर पर दिखाई नहीं दे सकते। अतः उन में से एक यह भी गुण है कि जब निम्नकोटि का आकर्षण अपना काम करना आरंभ करता है तो यद्यपि वह आकर्षण आकाशीय आकर्षण से बिलकुल विपरीत है तथापि आकाशीय आकर्षण उस आकर्षण की स्वाभाविक माँग से पैदा होना आरंभ हो जाता है। तो यह बात उचित है कि उन आकर्षणों के चरम सीमा के ज़ोरों के समय जो संसार का अन्तिम युग है इन दोनों में लड़ाई होना चाहिए थी क्योंकि प्रताप चाहता है कि विरोधी सदस्य को मिटा दे। तो जिस अवसर और स्थान में दोनों सदस्य समान स्तर का प्रताप और वैभव रखेंगे ऐसे दो सदस्य लड़ाई के बिना नहीं रह सकते क्योंकि प्रत्येक ख़ुदा के नबियों की किताबों में भविष्यवाणी के तौर पर वर्णन की गई है। इसी प्रकार बुद्धि भी इसको आवश्यक समझती है। क्योंकि जब दो विपरीत तथा शक्तिशाली आकर्षणों में परस्पर टक्कर हो तो आवश्यक है कि एक दूसरे को फ़ना (नष्ट) कर दे या दोनों फ़ना हो जाएँ। इस लड़ाई के बारे में नबियों की किताबों में

इस प्रकार वर्णन किया गया है कि जब हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर पूरा एक हज़ार वर्ष गुज़रा जिसमें नबियों की भविष्यवाणी के अनुसार शैतान क़ैद किया गया था तो निम्नकोटि के आकर्षण ने पृथ्वी पर अपना रंग जमाना आरंभ किया। यह वही युग था जबकि इस्लाम अपने पवित्र सिद्धान्तों की दृष्टि से अवनति की हालत की ओर झुक गया था और उसकी रूहानी उन्नति रुक गई थी और उसकी भौतिक विजयों का भी अन्त हो गया था और वह शैतान के क़ैद होने के दिनों में पैदा हुआ और अवश्य ऐसा ही होना चाहिए था जैसा कि समस्त नबियों ने यूहन्ना धार्मिक विद्वान तक गवाही दी है और शैतान के छूटने पर अर्थात 1000 ई० के बाद उसका पतन आरंभ हो गया और वह आगे बढ़ने से रुक गया। तब से शैतानी कारवाइयां भिन्न-भिन्न प्रकार की पद्धतियां में आरंभ हुईं और पृथ्वी पर यह पौधा बढ़ता गया और उसकी शाखाएं कुछ तो पूरब की ओर फैल गईं और कुछ पश्चिम की अन्तिम आबादियों तक जा निकलीं और कुछ दक्षिण की ओर तथा कुछ ने उत्तर की ओर ध्यान दिया जैसा कि शैतान के क़ैद रखने का समय हज़ार वर्ष था जिस पर बाहरी घटनाओं ने गवाही दी है ऐसा ही नबियों की भविष्यवाणियों की दृष्टि से शैतान के छूटने का समय भी हज़ार वर्ष ही था जो हिजरत की चौदहवीं सदी के सर पर पूरा हो जाता है। परन्तु हज़ार वर्ष ख़ुदा के हिसाब के अनुसार हैं अर्थात चांद के हिसाब से तथा ख़ुदा की ओर से यहूदियों और मुसलमानों को भविष्यवाणियों के समयों को पहचानने के लिए यही हिसाब दिखाया गया है और सूर्य के दिनों की दृष्टि से हिसाब करना मनुष्यों की बिदअत है जो पवित्र लेखों के आशय के विपरीत है। अतः इस हिसाब की दृष्टि से शैतान की मुहलत (छूट) के अन्तिम दिन यही हैं जिन में हम हैं बल्कि यूं समझो कि गुज़र भी चुके, क्योंकि हिजरी सदी जिस के सर पर हज़ार

वर्ष शैतान के छूटने का पूरा हो गया उस को उन्नीस वर्ष गुज़र चुके और शैतान नहीं चाहता कि उस से आज़ादी और हुकूमत छीन ली जाए विवशतावश दोनों आकर्षणों की लड़ाई होगी जो प्रारम्भ से मुकद्दर थी और संभव नहीं है कि ख़ुदा का कलाम ग़लत हो। और इन दिनों पर एक दूसरी गवाही यह है कि संसार के प्रारम्भ से अर्थात आदम के प्रकटन से आज तक छठा हज़ार भी गुज़र गया जिस में आदम द्वितीय पैदा होना चाहिए था। क्योंकि छठा दिन आदम की पैदायश का दिन है और ख़ुदा की पवित्र किताबों की दृष्टि से एक हज़ार वर्ष ऐसा है जैसा कि एक दिन। तो यह बात ख़ुदा के पवित्र वादों के अनुसार माननी पड़ती है कि वह आदम पैदा हो गया। यद्यपि वह अभी पूर्ण रूप से पहचाना नहीं गया और साथ ही यह भी मानना पड़ता है कि इस आदम का स्थान जो ख़ुदा के हाथ से रखा गया वह पूर्वी है न पश्चिमी। क्योंकि तौरात बाब-2 आयत 8 से यही सिद्ध होता है कि आदम को एक बाग़ में पूर्वी ओर स्थान दिया गया था। तो अवश्य है कि यह आदम भी पूर्वी देश में ही प्रकट होता कि प्रथम और अन्तिम की स्थानीय समरूपता क़ायम रहे। और इस इक़रार से जैसा कि मुसलमानों को चारा नहीं वैसा ही ईसाइयों को भी पलायन का स्थान नहीं बशर्ते कि नास्तिकता की रग बाधक न हो। तो असल सच्चाई को समझने के लिए कुछ कठिनाइयां शेष नहीं रहीं, और यह मसअला बहुत स्पष्ट है कि यह युग प्रकाश और अंधकार की लड़ाई का युग है और अंधकार ने चरम सीमा तक अपना काम कर लिया है और ये आशाएं नहीं की जा सकतीं कि आकाशीय प्रकाश के उतरने के बिना इस अंधकार पर कोई विजयी हो सके। इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं है कि अन्धकार अपने पूरे ज़ोर में है ईमानदारी का अधमरा दीपक बुझने के निकट है और परंपरागत आस्थाएं और परंपरागत ज्ञान तथा

नमाज़ें उस प्रकाश को यथावत (बहाल) नहीं कर सकतीं जो खो चुका है क्या अन्धा अन्धे को रास्ता दिखा सकता है? कदापि नहीं! क्या अंधकार अंधकार को दूर कर सकता है? किसी प्रकार संभव नहीं। अब तो एक नवीन मीनार की आवश्यकता है जो पृथ्वी पर तैयार हो जो निम्नकोटि की आबादियों से विशिष्टता के साथ ऊँचा हो ताकि आकाशीय प्रकाश उस पर उतरे और उस पर आकाशीय दीपक रखा जाए फिर समस्त संसार उस प्रकाश से प्रकाशमान हो जाए, क्योंकि यदि दीपक ऊंचे स्थान पर न रखा जाए तो उस का प्रकाश दूर-दूर तक कैसे फैल सके। अब आप को यह समझना शेष है कि मीनार क्या चीज़ है। अतः याद रहे कि मीनार उस पवित्र नफ़्स और मुतह्हर और बुलंद हिम्मत का नाम है जो कामिल इन्सान को मिलता है जो आकाशीय प्रकाश पाने का पात्र जैसा कि मीनार के मायने में यह अर्थ सम्मिलित है। और मीनार की ऊंचाई से अभिप्राय उस इन्सान की बुलन्द हिम्मत है तथा मीनार की दृढ़ता से अभिप्राय उस इन्सान की दृढ़ता है जो वह भिन्न भिन्न प्रकार की परिस्थतियों के समय में दिखाता है और उस की सफेदी और बरीयत है जो अन्ततः प्रकट हो जाती है जब यह सब कुछ हो लेता है अर्थात जब उस को बुलन्द हिम्मत, पूर्ण दृढ़ता, पूर्ण सब्र, दृढ़ता और तर्कों के साथ उस की बरीयत एक चमकते हुए मीनार की भांति खुल जाती है तब उस के प्रतापी आगमन का समय आ जाता है और पहला आगमन जो परीक्षाओं के साथ है उस का समय समाप्त हो जाता है तब वह रूहानियत ख़ुदा के प्रताप से रंगीन हो कर उस अस्तित्त्व (वजूद) पर उतरती है जो मीनार के रूप में खड़ा है तब ख़ुदा की आज्ञा से ख़ुदा के प्रभाव उस में पैदा हो जाते हैं यह सब कुछ द्वितीय आगमन में होता है और मसीह मौऊद का विशेष रूप से आगमन इसी वास्तविकता का पूर्ण चित्र है और मुसलमानों में जो यह

रिवायतें हैं कि मसीह मौऊद मीनार के पास उतरेगा। उतरने से अभिप्राय एक प्रतापी तौर का आगमन है जो अपने साथ ख़ुदाई रंग रखता है। यह नहीं कि वह इस से पहले पृथ्वी पर मौजूद नहीं था। परन्तु अवश्य है कि आकाश उसे लिए रहे जब तक कि वह समय न आए जो कि ख़ुदा ने निर्धारित कर दिया है। ख़ुदा की आदत में यह भी सम्मिलित है कि रूहानी बातों को मस्तिष्क में बिठाने के लिए उन के किसी भाग को शारीरिक (भौतिक) चित्र भी पैदा कर देता है। जैसा कि बैतुल मुकद्दस का मन्दिर (हैकल) और पवित्र मक्का का ख़ाना काब:दोनों चित्र रूहानी चमत्कारों के हैं। इसी आधार पर इस्लामी शरीअत में यह समझा गया है कि मसीह मौऊद मीनार पर या मीनार के करीब उतरेगा। एक ऐसे देश में जो दमिशक़ के पूर्वी ओर है। जैसा कि आदम को भी पूर्वी ओर ही जगह दी गई थी। इस प्रतापी आगमन से पहले भौतिक मीनार के बनाए जाने में कुछ हानि नहीं है, बल्कि हदीसों में बतौर भविष्यवाणी इस का वर्णन पाया जाता है कि वह मसीह मौऊद के प्रतापी आगमन के लिए एक निशान होगा जो उस आगमन से पहले बनाया जाएगा। यह मुक़द्दर है कि मसीह मौऊद का आना दो रंग में होगा। प्रथम-साधारण तौर पर, जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार की परीक्षाएं भरी हुई हैं, नाना प्रकार के कष्टों का समय है। जब यह दिन पूरे हो जाएंगे तब प्रतापी आगमन का समय हो जाएगा, और अवश्य है कि इससे पहले एक मीनार तैयार हो जाए जैसा कि हदीसों में पाया जाता है कि इस वास्तविकता को दिखाने के लिए एक ज़ाहिरी मीनार भी होगा और वह आन्तरिक मीनार का चित्र होगा। इससे पहले कि वह प्रतापी तौर पर उतरे संसार उसे नहीं पहचानता, क्योंकि वह संसार में से नहीं है और संसार उससे प्रेम नहीं करता। क्योंकि जिस ख़ुदा से वह आया है उस से भी संसार को प्रेम नहीं। तो अवश्य

है कि प्रथम आगमन में सताया जाए और दुख दिया जाए और उस पर विभिन्न प्रकार के आरोप लगाए जाएं। जैसा कि इस्लामी भविष्यवाणियों में लिखा है कि प्रांरभ में मसीह मौऊद को स्वीकार नहीं किया जाएगा और मूर्ख लोगों के वैर उसके बारे में बहुत बढ़ जाएंगे और बुराइयां चरम सीमा तक पहुँच जाएंगी। यहां तक कि एक व्यक्ति उस पर अत्याचार पूर्ण आक्रमण करके समझ लेगा कि उसने बड़ी नेकी का कार्य किया है और उसे दु:ख देकर यह समझ लेगा कि उसने अपने कृत्य से ख़ुदा को प्रसन्न कर दिया है। इसी प्रकार होता रहेगा और हर प्रकार का ज़लज़ला उस पर आएगा और उसे हर एक संकट का सामना होगा, यहां तक कि उसमें ख़ुदा कि आदत पूरी हो जाएगी। तब उसके प्रतापी आगमन का समय आ जाएगा और तैयार दिलों की आखें खोली जाएगीं और वह स्वयं सोचने लगेंगे कि यह क्या बात है और यह किस प्रकार का झूठा है जो पराजित नहीं होता और क्यों ख़ुदा के समर्थन उसके साथ हैं और हमारे साथ नहीं। तब ख़ुदा का एक फ़रिश्ता उनके दिलों पर उतरेगा और उनको समझाएगा कि क्या तुम्हारी हदीसों और रिवायतों की भविष्यवाणियां अवश्य घटित होने वाली हैं जो तुम्हारी रोक का कारण हैं और क्या उनमें से कुछ के संबंध में ढंग और ग़लती संभव और उस का स्थान नहीं और क्या कुछ भविष्यवाणियों का रूपकों के रंग में पूरा होना वैध नहीं और क्या यहूदियों के दुर्भाग्य और बेईमानियों का इस के अतिरिक्त कोई अन्य कारण भी था कि वे प्रतीक्षा करते रहे कि समस्त बातें ज़ाहरी (भौतिक) रूप में ही पूरी हों तथा उन के विचारों के अनुसार सब कुछ हो परन्तु न हुआ, तो फिर जब कि वही ख़ुदा अब भी है और वही उस की आदत तो क्यों वैध नहीं है कि वही आज़मायश तुम्हारे सामने भी आई हो। अन्तत: स्वाभाविक तौर पर मनुष्यों को लौटना इन्हीं विचारों की तरफ

की ओर हो जाएगा जैसा कि सदैव से होता चला आया है परन्तु यह बात सही नहीं है कि वास्तविक धर्म तथा ईमानदारी को फैलाने के लिए यह भौतिक लड़ाइयों का युग है क्योंकि तलवार सच्चाई के जौहरों को प्रकट नहीं कर सकती बल्कि उन को और भी छुपाती और सन्दिग्ध करती है जो लोग ऐसे विचारों के इच्छुक हैं वे इस्लाम के मित्र नहीं हैं बल्कि शत्रु हैं और उन की प्रकृति अत्यन्त नीच और घटिया रंग में तथा उन के साहस गिरे हुए और दिल उदास मस्तिष्क सुर्ख़ और तबियतें अंधकारमय हैं। क्योंकि वे विरोधियों को ऐसे ऐसे आरोप का अवसर देते हैं जो वास्तव में आ सकता है क्योंकि उन के कथन के अनुसार इस्लाम अपनी उन्नति के लिए जिहाद का मुहताज है और यह इस्लाम की निन्दा है क्योंकि जिस धर्म में यह शक्ति है कि वह अपनी सच्चाई को बौद्धिक तर्कों से या किसी अन्य प्रकार की सुदृढ़ गवाहियों से या आकाशीय निशानों से सरलतापूर्वक सिद्ध कर सकता है ऐसे धर्म के लिए कुछ आवश्यकता नहीं कि जब्र से और तलवार की धमकी से अपनी सच्चाई का इक़रार कराए। परन्तु यदि किसी धर्म में यह व्यक्तिगत विशेषता मौजूद नहीं और अपनी कमज़ोरी का तलवार से निवारण करता है तो ऐसे धर्म के झूठा होने के लिए अन्य किसी तर्क की आवश्यकता नहीं उस के काटने के लिए उसी की तलवार पर्याप्त है परन्तु यह आरोप कि जिहाद अब वैध नहीं तो इस्लाम के प्रारम्भिक काल में तलवार से क्यों काम लिया गया। यह आरोप लगाने वालों की अपनी ग़लती है जो अनभिज्ञता के कारण पैदा हुई है उन्हें मालूम नहीं कि इस्लाम धर्म फैलाने के लिए जब्र करने की हरगिज़ अनुमति नहीं देता। देखो क़ुर्आन में कैसे निषेध मौजूद है जो फ़रमाता है कि لَآ اِكْـرَاهَ فِى الدِّيْـنِ (सूरह अल बकरह: 257) अर्थात धर्म में जब्र नहीं करना चाहिए, फिर क्यों तलवार उठाई गई। इस का

मूल कारण यह है कि अरब के वहशी जिन में कोई शिष्टाचार और सभ्यता शेष नहीं रह गई थी वे इस्लाम और मुसलमानों के कट्टर शत्रु हो गए थे और जब उन पर तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा इस्लामी सच्चाइयों के खुले खुले तर्कों से समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा किया गया और उन के मस्तिष्कों में बैठाया गया कि मनुष्य हो कर पत्थरों की पूजा करना एक स्पष्ट ग़लती है जो मानवता के भी विरुद्ध है तो वे इन उचित बातों का कुछ भी उत्तर न दे सके और उन के निरुत्तर होने से समझदार लोगों को इस्लाम की ओर हरकत पैदा हो गई तथा भाई से भाई और बाप से बेटा अलग हो गया। तब उन्हें अपने झूठे धर्म को बचाने के लिए इस के अतिरिक्त कोई और उपाय उन के दिल में न आया कि कठोर से कठोर दण्डों के साथ लोगों को मुसलमान होने से रोक दें। तो मक्का में अबूजहल आदि रईसों की ओर से इसी उपाय पर कार्य आरम्भ हो गया। इस्लाम के प्रारम्भिक काल का इतिहास पढ़ने वाले भली प्रकार से जानते हैं कि मक्का में विरोधियों की ओर से ऐसी निर्दयता की कितनी घटनांए प्रकटन में आईं तथा कितने निर्दोष अत्याचारपूर्वक मारे गए परन्तु लोग फिर भी मुसलमान होने से नहीं रुकते थे क्योंकि प्रत्येक मोटी बुद्धि वाला मनुष्य भी जानता था कि मूर्तिपूजकों की तुलना में इस्लाम कितना औचित्य और सफाई रखता है। विवश होकर जब इस उपाय से भी पूरी सफलता प्राप्त नहीं हुई तो यह निर्णय लिया गया कि स्वयं आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ही क़त्ल किया जाए परन्तु ख़ुदा तआला आप को बचा कर मदीना ले गया परन्तु उन्होंने फिर भी क़त्ल करने के लिए पीछा किया और किसी स्थिति में अपनी आदत को छोड़ना न चाहा तो इस स्थिति में इस्लाम के लिए इस कार्यवाही के अतिरिक्त और क्या चारा था कि वह इन आक्रमणों की प्रतिरक्षा करता और अनुचित आक्रमण करने

वालों को दण्ड देता। अत: इस्लाम की लड़ाइयां धर्म प्रसार करने के लिए नहीं थीं बल्कि मुसलमानों के प्राणों की रक्षा करने के लिए थीं। क्या कोई सद्बुद्धि स्वीकार कर सकती है कि इस्लाम वहशी मूर्तिपूजकों के सामने भी अपनी तौहीद का औचित्य सिद्ध करने में असमर्थ था और क्या कोई बुद्धिमान स्वीकार कर सकता है कि वे मुश्रिक लोग जो पत्थरों और स्थूल पदार्थों की पूजा करते और भिन्न भिन्न प्रकार की गन्दगियों में लिप्त थे इस्लाम उन के आगे भी समझाने के प्रयास की दृष्टि से पराजित था और तलवार से काम चलाना चाहता था। ख़ुदा की शरण। ये विचार हरगिज़ सही नहीं हैं जिन्होंने इस्लाम पर ऐसे आरोप किए हैं जिन्होंने सर्वथा अन्याय करते हुए वास्तविकता को छुपाया है।

हां यह सच है कि इस ज़ुल्म से जैसा कि मौलवियों ने भाग लिया पादरियों ने भी इन से कम भाग नहीं लिया। और इस्लाम पर इस प्रकार के आरोप कर के मूर्ख मौलवियों की बातों को जन समान्य के मस्तिष्क में ख़ूब जमा दिया और उन को यह धोखा लगा है कि जिस हालत में हमारे मौलवी जिहाद का फत्वा देते हैं और पादरी जो बड़े विद्वान हैं ये भी यही आरोप प्रस्तुत करते हैं तो इस से सिद्ध होता है कि वास्तव में हमारे धर्म में जिहाद वैध है अब यह कितना अन्याय हुआ कि दो विभिन्न गवाहियों से इस्लाम पर यह आरोप मढ़ा जाता है। यदि पादरी ऐसा तरीका न अपनाते और ईमानदारी से सच पर चलते हुए यह कहते कि मौलवी मूर्खता और अज्ञानता का फत्वा देते हैं अन्यथा इस्लाम के प्रारम्भ में जिस स्थिति ने यह आवश्यकता पैदा की थी अब वह स्थिति इस युग में मौजूद नहीं, तो आशा थी कि संसार से जिहाद का विचार ही समाप्त हो जाता परन्तु जोश अधिक और समझ कम थी इसलिए वास्तविकता को नहीं समझा। हां यह सच है कि अरब के लोग बहुत उपद्रवी गतिविधियों

के बाद ख़ुदा तआला की नज़र में क़त्ल योग्य ठहर गए थे। तब यह आदेश भी निकला था कि सब क़त्ल के योग्य हैं परन्तु फिर भी यदि ईमान ले आएं तो क़त्ल के दण्ड से क्षमा दी जाएगी। सम्भवत: कम समझ विरोधियों ने इस आदेश से धोखा खाया है उन्हें मालूम नहीं कि यह स्थिति जब्र की नहीं बल्कि क़त्ल योग्य के लिए एक रियायत है इस को जब्र समझ लेना इस से बढ़कर कोई मूर्खता नहीं। वे लोग तो क़ातिल होने के कारण क़त्ल के योग्य थे न कि काफिर होने के कारण। और दयालु ख़ुदा यह भी अच्छी तरह जानता था कि उन्होंने इस्लाम की सच्चाई को भली भांति समझ लिया है। इसलिए उस की दया ने चाहा कि क़त्ल योग्य अपराधियों को गुनाह माफ कराने का फिर भी एक अवसर दिया जाए। तो इस से भी यह सिद्ध होता है कि इस्लाम का हरगिज़ यह उद्देश्य न था कि किसी को क़त्ल करे। बल्कि जो लोग अपने रक्तपात करने के कारण क़त्ल योग्य थे उन के लिए भी क्षमा का एक मार्ग निकाल दिया। उस युग में इस्लाम को इन कठिनाइयों का जगह जगह सामना करना पड़ा कि प्रत्येक क़ौम में पक्षपात इतना बढ़ा हुआ था कि कोई बेचारा किसी क़ौम में से मुसलमान हो जाता या तो वह क़त्ल किया जाता था और या उस की जान बड़े ख़तरे में पड़ जाती थी और जीवन उस पर मुसीबत हो जाता था। तो इस स्थिति में इस्लाम को शान्ति स्थापित करने के लिए भी लड़ाइयां करनी पड़ीं और इन दो प्रकारों के अतिरिक्त उस समय में आज़मायश के समय में इस्लाम ने कभी युद्ध का नाम न लिया। और इस्लाम का हरगिज़ उद्देश्य न था कि धर्म के लिए वह युद्ध करे। परन्तु उसे युद्ध करने पर अकारण मजबूर किया गया। तो जो कुछ उस से प्रकट में आया वह अपनी सुरक्षा और प्रतिरक्षा की आवश्यकता के लिए प्रकटन में आया तत्पश्चात नासमझ मौलवियों ने इस मामले पर और रंग

चढ़ा दिया। और एक शर्म योग्य दरिन्दगी को अपना गर्व समझा। परन्तु यह इस्लाम का दोष नहीं है ये स्वयं उन लोगों की अक्लों का दोष है जो मनुष्यों के ख़ून को चौपायों के ख़ून से कम महत्त्व देते हैं और अभी तक ख़ूनों से तृप्त नहीं हुए बल्कि इसी उद्देश्य की प्राप्ति में एक ख़ूनी महदी की प्रतीक्षा में हैं। मानो समस्त क़ौमों को यह सबूत देना चाहते हैं कि इस्लाम अपने प्रचार के लिए हमेशा जब्र और ज़बरदस्ती का मुहताज रहा है और इस में कोई हल्की और कम सच्चाई भी नहीं।

मुझे मालूम होता है कि वर्तमान समय के कुछ मौलवी इस पतन पर अभी ख़ुश नहीं हैं जो इस्लाम पर आ रहा है और वे ऐसी आस्थाओं पर ज़ोर देकर किसी अन्य बहुत निचले स्थान तक इस्लाम को ले जाना चाहते हैं। परन्तु निःसंदेह समझो कि ख़ुदा को स्वीकार नहीं है कि इस्लाम ऐसी निन्दाओं और आरोपों का निशाना बने। मूर्ख विरोधियों के लिए यह विपत्ति पर्याप्त है कि वे अब तक अपने इस विचार पर जमे हुए हैं कि प्रारम्भिक काल में और बाद में भी इस्लाम अपनी जमाअत बढ़ाने के लिए तलवार से काम लेता रहा। अब यह युग और यह समय है कि इस ग़लती को दिलों से निकाल दिया जाए न यह कि और भी पुख्ता किया जाए। यदि इस्लाम के मौलवी सहमत होकर इस बात पर ज़ोर दें कि वे वहशी मुसलमानों के दिलों से इस ग़लती को निकाल दें तो वे निःसंदेह क़ौम पर एक बड़ा उपकार करेंगे और न केवल यह बल्कि उन के द्वारा इस्लाम की ख़ूबियों की एक भारी जड़ लोगों पर प्रकट हो जाएगी और वे सब घृणाएं जो अपनी ग़लती से धार्मिक विरोधी इस्लाम के बारे में रखते हैं जाती रहेंगी तब उन की नज़रें साफ होकर शीघ्र इस प्रकाश के झरने से लाभ प्राप्त करेंगी यह तो स्पष्ट है कि एक ख़ूनी मनुष्य के नज़दीक कोई नहीं आ सकता। प्रत्येक व्यक्ति उस से डरता है विशेष रूप से बच्चे

और स्त्रियां उस को देख कर कांपती हैं और वह एक दीवाने की भांति दिखाई देता है और एक ग़ैर धर्म का विरोधी उस के पास रात रहने से भी डरता है कि ऐसा न हो कि ग़ाज़ी बनने के लिए रात को उठ कर उस को क़त्ल कर दे क्योंकि इन्हीं सवाबों (पुण्यों) के विचार से कुछ सरहदी अब तक निर्दोषों का ख़ून कर के यह समझ लेते हैं कि आज हम ने अपने एक ही कार्य से स्वर्ग प्राप्त कर लिया और उस की समस्त नेमतों के अधिकारी हो गए तो कितना शर्म का स्थान है कि ग़ैर क़ौमों को मुसलमानों के पड़ोस से अमन उठ गया है और वे अपने दिलों में कभी तसल्ली नहीं पा सकते कि यदि अवसर पाएं तो यह क़ौम हम से कुछ नेकी कर सकेगी। ऐसे नमूने कई बार सामने आते हैं कि एक अन्य क़ौम के मनुष्य को देखा जाता है कि वह वास्तव में मुसलमानों की इस छुपी हुई आस्था से निराश और थर्राया हुआ दिखाई देता है।

मैं एक ऐसा दृश्य देख चुका हूं और वह शायद 20 नवम्बर 1901 ई की यह घटना है कि हमारे इस स्थान क़ादियान में एक अंग्रेज़ आया और उस समय हमारी जमाअत के बहुत लोग एकत्र थे और कोई धार्मिक बातचीत आरम्भ थी और वह आकर एक किनारे पर खड़ा हो गया तब उसे बहुत मुरव्वत से बुलाया गया और अपने पास बिठाया गया। मालूम हुआ कि वह एक पर्यटक अंग्रेज़ है और अरब का देश भी देख आया है और हमारी जमाअत का चित्र लेना चाहता है अतः उस के काम में उस के सहायता दी गई और उस की आवभगत और तसल्ली के तौर पर कहा गया कि वह कुछ दिन हमारे पास रहे परन्तु मालूम हुआ है कि वह डरता था कि मैंने बहुत देखे हैं जो ईसाइयों को निर्दयता पूर्वक क़त्ल कर देते हैं। अतः उस ने ऐसे कुछ किस्से बग़दाद के भी सुनाए जिस में ऐसी घटनाएं बड़ी निर्दयता से हुई थीं। तब उस को बड़ी नर्मी और मुरव्वत

से समझाया गया कि यह जमाअत जो अहमदी फ़िर्क़ा कहलाती है ऐसी आस्थाओं से बहुत अप्रसन्न तथा ऐसे लोगों को बहुत नफरत की दृष्टि से देखती है और मानवीय अधिकारों के बारे में जो कुछ इस फ़िर्क़े ने काम करना है वह यही है कि इस्लाम में से ऐसे विचारों को मिटा दे तब उस का दिल सन्तुष्ट हुआ और वह ख़ुशी से एक रात हमारे पास रहा।

इस किस्से के वर्णन करने का मतलब यह है कि मुसलमानों की ऐसी आस्थाएं जो कि सर्वथा वस्तु स्थिति से विरुद्ध हैं, ग़ैर कौमों के लिए बहुत हानिप्रद हुई हैं और उन के दिलों में कुधारणा और नफ़रत पैदा हुई है और मुसलमानों की सच्ची हमदर्दी के बारे में उन के विचार बहुत ही कम हो गए हैं और यदि कुछ हैं भी तो ऐसे लोगों के बारे में जो मौलवियों का जीवन नहीं रखते इस्लामी सिद्धान्तों की पाबन्दी की कुछ परवाह नहीं करते। तो जब कि मुसलमानों के बारे में इतनी कुधारणा बढ़ गई है जिस के बढ़ाने का कारण वे स्वयं ही हैं तो क्या इस से बढ़ कर कोई गुनाह और भी होगा कि एक संसार को ऐसे उलेमा और उन के अनुयायियों ने इस्लाम से वंचित कर दिया। क्या ऐसा धर्म ख़ुदा की तरफ से हो सकता है जो दिलों के अन्दर अपनी शिक्षाओं को इस के बिना नहीं उतार सकता जब तक तलवार की चमक न दिखाए। सच्चा धर्म तो वह है जो अपनी व्यक्तिगत विशेषता और शान्ति से आकाट्य तर्कों द्वारा स्वयं तलवार का काम दे न यह कि लोहे की तलवार का मुहताज हो।

यही ख़राबियां हैं जो चाहती हैं कि इस समय सुधारक पैदा हो। जब हम इस्लाम की आन्तरिक हालत पर विचार करें तो ऐसी भयावह हालत है कि जैसे सूर्य को ग्रहण लगा हुआ है और उस का बहुत सा भाग अंधकारमय हो चुका है तथा कुछ थोड़ा सा शेष है मुसलमानों की व्यावहारिक हालतें दयनीय हैं। कुछ हदीसें ऐसी बनाई गई हैं जो उन की

नैतिक हालतों पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालती हैं और ख़ुदा के निर्धारित किए कानून की शत्रु हैं। उदाहरणतः ख़ुदा के कानून ने मानव जाति के लिए तीन प्रकार के अधिकार स्थापित किए हैं।

1.यह कि बिना गुनाह के किसी को क़त्ल न किया जाए।

2.यह कि बिना ग़लती के किसी के सम्मान में विघ्न न डाला जाए।

3.यह कि बिना अधिकार के किसी का माल न लिया जाए।

परन्तु मैं देखता हूं कि कुछ मुसलमानों ने इन तीनों आदेशों को तोड़ दिया है वे एक निर्दोष का ख़ून कर देते हैं और नहीं डरते। उन के मूर्ख मौलवियों ने ऐसे फ़त्वे भी दे रखे हैं कि ग़ैर क़ौमों की स्त्रियों को जिन को वे काफिर और अधर्मी कहते हैं किसी बहाने से बहका कर ले जाना वैध है या पकड़ लेना और अपनी स्त्री बनाना। इसी प्रकार काफिरों का माल बेईमानी और चोरी कर के लेना वैध है कोई गुनाह नहीं? अब सोचना चाहिए कि जिस धर्म में ऐसी ख़राबी पैदा हो जाए कि उस में ऐसे ऐसे मौलवी भी फत्वा देने वाले मौजूद हैं वह धर्म कितनी ख़तरनाक हालत में है। विषय लोलुप (शहवत परस्त) लोगों ने यह सब फ़त्वे अपनी ओर से बना लिए हैं और ख़ुदा और रसूल पर झूठ गढ़ लिया है। ये समस्त गुनाह जो मूर्ख वहशी कर रहे हैं सब उन की गर्दन पर हैं वे भेड़िए हैं परन्तु भेड़ों के लिबास में प्रकट होते हैं। और धोखा देते हैं वे ज़हर हैं परन्तु अपने लिए ख़ूबसूरत विषनाशक (तिरयाक) दिखाते हैं वे इस्लाम और ख़ुदा की मख़लूक (सृष्टि) के लिए बहुत बुरा चाहने वाले हैं और उन के दिल दया और हमदर्दी से ख़ाली हैं परन्तु स्वयं को छुपाते हैं वे मक्कारी के उपदेश देते और अपनी कामवासना संबन्धी उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हैं, वे संयमियों जैसे लिबासों में मस्जिदों में आते हैं परन्तु उन की पापियों जैसी आदतें छुपी हुई हैं। अब एक देश की हालत

नहीं और न विशेष शहर की और न किसी विशेष फ़िर्क: बल्कि समस्त इस्लामी संसार में एक गिरोह ऐसा है जो उलेमा कहलाते और मौलवियों जैसा जुब्बा पहनते हैं और जहां तक संभव है अपने रूपों को धार्मिक लोगों के समान बनाते हैं ताकि उन को बहुत मुक़द्दस और बुज़ुर्ग समझा जाए परन्तु उन के कर्म गवाही देते हैं कि वे क्या हैं और किस चरित्र के इन्सान हैं वे नहीं चाहते कि संसार में सच्ची पवित्रता और सच्ची हमदर्दी फैले क्योंकि इस में वे अपनी हानि करते हैं।

तो आज कल इस्लाम बड़ी कठिनाइयों में फंस गया है। रूहें प्राय: मर गई हैं उन में नेकी की ओर तनिक हरकत नहीं। संतुलन को इन लोगों ने बिलकुल छोड़ दिया है। इन में एक वह गिरोह है जो कब्रों की पूजा करते हैं और ख़ाना काबा की तरह उन का तवाफ करते हैं तथा अपने पीरों की रूहों को ऐसा सामर्थ्वान और अधिकार जमाने वाला जानते हैं कि जैसे सब कुछ उन को ख़ुदा की ओर से अधिकार दिया गया है। अधिकतर गद्दियां ऐसी ही पाओगे जिन के साथ कब्र भी है जिन की वे अपने मुरीदों के साथ पूजा करते हैं और यदि कोई उन से चमत्कार मांगता है तो क़ब्र वाले के सैकड़ों चमत्कार सुना देते हैं और सबूत एक का भी नहीं। उन के नज़दीक इस्लाम का मग़ज़ क़ब्र की पूजा है और समस्त दूसरे मुसलमानों को वे गुमराह जानते हैं यह तो वह समूह है जिस ने हद से गुज़रने का मार्ग अपनाया है इन की तुलना में एक कमी करने वाला गिरोह भी मौजूद है और वह इन्कार करने में हद से गुज़र रहे हैं यहां तक कि विलायत तो विलायत (वली होना) उन के निकट नुबुव्वत भी कुछ चीज़ नहीं। चमत्कारों के वे बिल्कुल इन्कारी हैं और उन पर हंसी ठठ्ठा उड़ाते हैं और वह्यी की यही ताबीर करते हैं कि किताब के लेखक के अपने विचार होते हैं और उस को ऐसे विचारों की काट-छांट

में एक महारत होती है और ऐसी ऐसी भविष्यवाणी जो बौद्धिक प्रतिभा की सीमा से दूर हो और शुद्ध ग़ैब की ख़बर हो असंभव है. अत: उन के नज़दीक न ख़ुदा की तरफ से कोई वह्यी उतरती है और न चमत्कार कोई चीज़ है और न भविष्यवाणी कोई वास्तविकता रखती है और मुर्दों की क़ब्रें केवल मिट्टी का ढेर हैं जिन के साथ रूह का कोई सम्बन्ध नहीं और मुर्दों का जीवित हो जाना बुद्धि की कमी के युग की कहानियां हैं तथा आख़िरत की चिन्ता पागलपन है और सम्पूर्ण बुद्धिमत्ता इसी में है कि संसार कमाने की योग्यताएं प्राप्त करें। जो लोग दिन रात संसार में और संसार की करतूतों में व्यस्त हैं उन का अनुकरण करें और ऐसे ही बन जाएं।

यह न्यूनाधिकता तो नुबुव्वत के समझने और आख़िरत के सम्बन्ध में है परन्तु इस के अतिरिक्त मुसलमानों के रहन सहन के मामलों में बात-बात में न्यूनाधिकता पाई जाती है न कलाम में संतुलन पाया जाता है न काम में, न शिष्टाचार में, न निकाह में, न तलाक में, न रुकावट में, न सहमति में, न क्रोध में, न दया में, न प्रतिशोध में, न क्षमा में। अत: इस क़ौम में अदभुत प्रकार की असभ्यता का तूफान खड़ा हुआ है। जहालत का कुछ अन्त नहीं। गुमराही की कुछ सीमा और किनारा नहीं। फिर जब कि वह क़ौम जो तौहीद और बीच की मध्यम मार्ग का सिद्धान्त लेकर संसार में प्रकट हुई थी उसके असंतुलनों की यहां तक नौबत पहुंच गई है तो दूसरी कौमों पर क्या अफसोस और क्या चर्चा।

ईसाई क़ौम का केन्द्र ऐसी ज़मीन (आधार) है जिसमें बुद्धिमत्ता और मानसिक शक्तियों की उत्तमता बहुत कुछ आशाएं दिलाती थी परन्तु अफसोस से कहना पड़ता है कि धर्म और तौहीद के मामले में उन्होंने भी भौतिकी और दर्शन शास्त्र पढ़ कर डुबो दिया है। एक ओर अब हम

दृष्टि डालते हैं कि वे संसारिक मामलों की तदबीर और तरतीब (क्रम) तथा प्रतिदिन नवीन उद्योगों के निकालने में किस अन्तिम बिन्दु तक पहुंच गए है। और फिर जब हम इसकी ओर देखते हैं कि वे ख़ुदा को पहचानने के मसअले में कैसे एक असहाय मनुष्य को समस्त लोकों का प्रतिपालक समझ बैठे हैं तो आश्चर्य होता है कि संसार के कार्यों में यह बात की तह तक पहुंचने वाला मस्तिष्क और ख़ुदा को पहचानने में यह बुद्धि और विवेक। और जब हम विचार करें कि ईसाइयों और मुसलमानों में न्यूनाधिकता की दृष्टि से परस्पर अन्तर क्या है तो मालूम होता है कि मुसलमानों में ऐसे लोग बहुत हैं जो मानव जाति के अधिकारों को नष्ट करते हैं और ईसाईयों में ऐसे लोग हैं जो ख़ुदा के अधिकारों को नष्ट करते हैं। क्योंकि मुसलमानों को जिहाद की समस्या की ग़लती ने ऐसा कठोर हृदय कर दिया है कि उनके दिलों में मानव जाति की सच्ची मुहब्बत नहीं रही इसलिए उन में से वहशी लोग कुछ कामवासना सम्बन्धी उद्देश्य या शैतानी जोश के कारण इन्सान का ख़ून करने को तैय्यार हो जाते हैं और अपमानित करने और माल छीनने से भी संकोच नहीं करते तथा मानव जाति के अधिकारों का एक आवश्यक भाग नष्ट कर के मानवता को धब्बा लगा दिया है। फिर जब हम ईसाइयों की स्थितियों को ध्यानपूर्वक देखें तो पूर्ण स्पष्टता से खुल जाता है कि उन्होंने ख़ुदा के अधिकारों को नष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी और एक असहाय मनुष्य को अकारण ख़ुदा बना रखा है और जिस उद्देश्य के लिए ख़ुदा बना रखा था वह उद्देश्य प्राप्त भी नहीं हुआ? यदि गुनाह से पवित्र होने के लिए यही नुस्ख़ा था कि यसू मसीह के ख़ून पर ईमान लाया जाए तो यूरोप के लोगों को संसार के मोह और भिन्न भिन्न प्रकार के काम वासनाओं के गुनाह से जिन का वर्णन करना भी शर्म का स्थान है क्यों पवित्र नहीं कर

सका। बल्कि इस की बजाय विलक्षण उन्नति हुई। क्या यूरोप के देश दुष्कर्मों में एशिया के देशों से कुछ कम हैं? तो फिर इस प्रभाव विहीन नुस्ख़े पर पुनः क्यों विचार नहीं किया गया। संसार को अस्थायी स्वास्थ्य के लिए प्रत्येक डाक्टर और बीमार इस नुस्ख़े का पालन करता है कि जब एक नुस्ख़े से सप्ताह दस दिन तक कोई लाभ नहीं होता तो वह नुस्ख़ा बदलना पड़ता है और कोई बहुत अच्छा उपाय सोचा जाता है तो फिर क्या कारण है कि ग़लत सिद्ध होने के बावजूद अब तक यह नुस्ख़ा बदला नहीं गया? क्या उन्नीस सौ वर्ष निष्फल गुज़र जाने के बावजूद अब तक यह विचार महत्त्वपूर्ण है कि मसीह की मृत्यु पर ईमान लाना वास्तविक मुक्ति (नजात) प्रदान करता है। या यह आशा कर सकते हैं कि यद्यपि वर्तमान युग का निर्णय करने वाला कोई प्रकट नहीं हुआ परन्तु भविष्य में वह समय आने वाला है कि संसार में सब से अधिक दुष्कर्मों और शराब आदि के नशें में मस्त होने से बचने वाले ईसाई होंगे। जो व्यक्ति यूरोप के देशों आदि में से किसी देश में रहता है वह यदि चाहे तो गवाही दे सकता है कि यह बयान सही है बल्कि बुद्धिमान जिस ने कभी यूरोप की सैर की है और कुछ समय पैरिस इत्यादि में रह चुका है उसे इस गवाही में संकोच नहीं होगा कि अब यूरोप के कुछ भाग इस हालत तक पहुंच गए हैं कि क़रीब है कि अधिकांश लोगों की नज़र में व्यभिचार कुछ गुनाह ही नहीं है। उन के नज़दीक एक पत्नी से अधिक निकाह करना अवैध है परन्तु बुरी नज़र डालना अवैध नहीं। वास्तव में फ्रांस इत्यादि में लाखों स्त्रियां ऐसी पाई जाएंगी जिन को पति की आवश्यकता नहीं। तो या तो कहना पड़ेगा कि उन के लिए इंजील में से कोई नई आयत निकल आई है जिस से ये सब कारवाइयां वैध हो गई हैं या अवश्य यह कहना पड़ेगा कि मसीह के ख़ून (क़त्ल) के नुस्ख़े ने विपरीत प्रभाव किया और

दावा ग़लत निकला। परन्तु सच यही है कि यह नुस्ख़ा सही न था तथा एक मनुष्य के मरने को दूसरे मनुष्य के मुक्ति पाने से कोई सम्बन्ध नहीं और ख़ुदा का जीवित होना समस्त बरकतों का आधार है न कि मरना। सूर्य के उदय होने से प्रकाश पैदा होता है न कि अस्त होने से। जब कि इस नुस्खे से गुनाहों से पवित्र होने का उद्देश्य प्राप्त न हो सका तो वह सिद्धान्त भी सही न रहा कि यह ख़ुदा का बेटा था जिस ने इस नीयत से अपने आप को मार दिया। हम ख़ुदा के लिए ऐसी मौत प्रस्तावित नहीं कर सकते कि जान भी गई और काम भी न हुआ। प्रथम तो यह बात ही ख़ुदा के अनादि नियम के विरुद्ध है कि ख़ुदा भी मौत, फना, प्रत्येक हानि और अपमान को स्वयं पर स्वीकार कर के एक स्त्री के पेट से पैदा हो सकता है। क्योंकि इस दावा को न तो किसी उदाहरण से सिद्ध किया गया है ताकि यह बात समझ में आ जाए कि चार बार पहले भी ख़ुदा ने इसी प्रकार से जन्म लिया था। और दिल संतुष्ट हो जाए और न इस दावे को ख़ुदा के चमत्कारों के साथ जो मानवीय चमत्कारों की सीमा से बाहर हों पुख़्ता सबूत तक पहुंचाया गया है। और फिर इस के बावजूद इस आस्था का मूल उददेश्य जिस के लिए आस्था बनाई गई थी बिल्कुल अज्ञात है। संसार में कामवासना सम्बन्धी इच्छाओं को पूरा करने के लिए बड़े बड़े दो गुनाह हैं एक शराब पीना तथा एक व्यभिचार। अब बताओ कि क्या यह सच नहीं है कि इन दो गुनाहों (पापों) में यूरोप के अधिकतर पुरुष और स्त्रियों ने पूरा भाग लिया है बल्कि मैं इस बात में अतिशयोक्ति नहीं देखता कि शराब पीने में एशिया के समस्त देशों की अपेक्षा यूरोप बढ़ा हुआ है। यूरोप के अधिकतर शहरों में शराब बेचने की इतनी दुकानें मिलेंगी कि हमारे कस्बों की हर प्रकार की दुकानें मिला कर उन से बहुत कम होंगी और अनुभव गवाही दे रहा है कि समस्त

गुनाहों की जड़ शराब है। क्योंकि वह कुछ मिनट में ही नशे में मस्त करके ख़ून करने तक निडर कर देती है और दूसरे प्रकार का पाप और दुष्कर्म उसके आवश्यक सामान है। मैं सच-सच कहता हूं इस पर ज़ोर देता हूं कि शराब और संयम हरगिज़ जमा नहीं हो सकते। जो व्यक्ति इनके दुष्परिणामों से अवगत नहीं वह बुद्धिमान ही नहीं तथा इसमें एक और संकट है कि इसकी आदत को छोड़ना प्रत्येक का काम नहीं।

अब यदि यह प्रश्न प्रस्तुत हो कि मसीह का ख़ून गुनाहों से पवित्र नहीं कर सकता जैसा कि वह वास्तविक तौर पर पवित्र नहीं कर सका तो फिर गुनाहों से पवित्र होने का कोई इलाज भी है या नहीं। क्योंकि गन्दा जीवन वास्तव में मरने से अधिक बुरा है। तो मैं इस प्रश्न के उत्तर में न केवल ज़ोरदार दावे से बल्कि अपने व्यक्तिगत अनुभव से और अपनी वास्तविकता उन आज़माइशों से देता हूं जो वास्तव में पापों से पवित्र होने के लिए उस समय से कि जो इन्सान पैदा हुआ आज तक जो अन्तिम दिन हैं पाप और अवज्ञा से बचने का केवल एक ही माध्यम सिद्ध हुआ है और वह यह है कि मनुष्य निश्चित तर्कों और चमकते हुए निशानों के द्वारा उस मारिफ़त तक पहुंच जाए जो वास्तव में ख़ुदा को दिखा देती है और स्पष्ट हो जाता है कि खुदा का प्रकोप एक खा जाने वाली आग है और फिर खुदा के सौन्दर्य की चमकार होकर सिद्ध हो जाता है कि प्रत्येक पूर्ण आनन्द खुदा में है। अर्थात प्रतापी और सौन्दर्य के तौर पर समस्त पर्दे उठाए जाते हैं। यही एक उपाय है जिससे कामवासना संबंधी वासनाएं रुकती हैं और जिस से मजबूर होकर मनुष्य के अन्दर एक परिवर्तन पैदा हो जाता है। इस उत्तर के समय कितने लोग बोल उठेंगे, क्या हम ख़ुदा पर ईमान नहीं रखते? क्या हम ख़ुदा से नहीं डरते और उससे प्रेम नहीं रखते? और क्या समस्त संसार थोड़े लोगों के

अतिरिक्त ख़ुदा को नहीं मानता। फिर वे भिन्न-भिन्न प्रकार के गुनाह भी करते हैं तथा नाना प्रकार के पाप और दुराचार में लिप्त दिखाई देते है। तो इसका उत्तर यह है कि ईमान और चीज़ है तथा इर्फ़ान और चीज़ है। हमारे वक्तव्य का यह उद्देश्य नहीं कि मोमिन गुनाह से बचता है। अर्थात् वह जिसने ख़ुदा के डर का मज़ा भी चखा और ख़ुदा के प्रेम का भी। शायद कोई कहे कि शैतान को पूर्ण मारिफ़त प्राप्त है फिर वह क्यों अवज्ञाकारी है। इसका यही उत्तर है कि उसे वह पूर्ण मारिफ़त हरगिज़ प्राप्त नहीं है जो भाग्यशाली लोगों को दी जाती है। यह मनुष्य की प्रकृति में है कि वह पूर्ण श्रेणी के ज्ञान से अवश्य प्रभावित होती है। और जब मौत का मार्ग अपना भयावह मुंह दिखाए तो उसके सामने नहीं आता। परन्तु ईमान की वास्तविकता केवल यह है कि सुधारण से स्वीकार कर ले, परन्तु इर्फ़ान की वास्तविकता यह है कि उस स्वीकार की हुई बात को देख भी ले। तो इर्फ़ान और इस्यान (अवज्ञा) दोनों का एक ही दिल में एकत्र होना असंभव है, जैसा कि दिन और रात का एक ही समय में एकत्र हो जाना असंभव है।

तुम्हारा प्रतिदिन का अनुभव है कि जब एक वस्तु का हानिप्रद होना सिद्ध हो जाए तो दिल तुरन्त उससे डरने लगता है। उदाहरणतया जिस को यह मालूम नहीं कि यह वस्तु जो मेरे हाथ में है यह संखिया है वह उसको कोई लाभप्रद दवा समझ कर एक ही समय में तोला या दो तोला तक भी खा सकता है परन्तु जिसको इस बात का अनुभव हो चुका है कि यह तो घातक ज़हर है वह एक माशा के बराबर भी उसे इस्तेमाल नहीं कर सकता। क्योंकि वह जानता है कि उसके खाने के साथ ही संसार से विदा हो जाएगा। इसी प्रकार जब मनुष्य को वास्तविक तौर पर मालूम हो जाता है कि निस्संदेह ख़ुदा मौजूद है और वास्तव में

सब प्रकार के गुनाह उसकी दृष्टि में दण्डनीय हैं। जैसे चोरी, रक्तपात, व्यभिचार, अन्याय, बेईमानी, शिर्क, झूठी गवाही देना धोखा देना वचन भंग करना, लापरवाही, नशे की मस्ती में जीवन गुज़ारना, ख़ुदा का कृतज्ञ न होना, ख़ुदा से न डरना, उसके बन्दों के साथ सहानुभूति न करना, ख़ुदा को भय युक्त दिल के साथ स्मरण न करना, भोग-विलास और संसार के आनन्दों में पुर्णतया लीन हो जाना, सच्ची नेमतें देने वाले (ख़ुदा) को भुला देना, दुआ और विनय से कुछ मतलब और संबंध न रखना, बेचने वाली वस्तुओं में खोट मिलाना या तोल में कमी करना या बाज़ार से कम मूल्य पर बेचना, माता पिता की सेवा न करना, पत्नियों से अच्छा मेल मिलाप न रखना, पति का पूर्ण रूप से आज्ञापालन न करना, नामहरम ⁕ (वैध) पुरुषों या स्त्रियों को बुरी नज़र से देखना, अनाथों, असहायों, निर्बलों, कमज़ोरों, दुखी लोगों की कुछ परवाह न करना, पड़ोसी के अधिकारों का कुछ भी ध्यान न, रखना और उसे कष्ट देना, अपनी बड़ाई सिद्ध करने के लिए दूसरे का अपमान करना, किसी को दिल दुखाने वाले शब्दों के साथ ठटठा करना या अपमान के तौर पर उसका कोई बुरा उपनाम रखना या उस पर कोई अनुचित इल्ज़ाम लगाना या ख़ुदा पर झूठ गढ़ना और नऊज़ु बिल्लाह नुबुव्वत या रिसालत या ख़ुदा की और से होने का झूठा दावा कर देना या ख़ुदा तआला की हस्ती से इन्कारी हो जाना या एक न्यायवान बादशाह से बग़ावत करना, और शरारत से देश में उपद्रव फैलाना। तो ये समस्त गुनाह उस जानकारी के बाद कि प्रत्येक के करने से दण्ड का होना एक आवश्यक बात है स्वयं छूट जाते हैं।

शायद फिर कोई धोखा खा कर फिर यह प्रश्न प्रस्तुत कर दे इस के बावजूद कि जानते हैं कि ख़ुदा मौजूद है और यह भी जानते हैं कि

⁕ **नामहरम -** इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति जिस से निकाह वैध है और वह व्यक्ति जिस से स्त्री का पर्दा आवश्यक है। (अनुवादक)

गुनाहों का दण्ड होगा फिर भी हम से गुनाह होता है, इसलिए हम किसी अन्य माध्यम के मुहताज हैं। तो हम उस का वही उत्तर देंगे जो पहले दे चुके हैं कि हरगिज़ संभव नहीं किसी प्रकार संभव नहीं है कि तुम इस बात की पूरी प्रतिभा प्राप्त कर के कि गुनाह करने के साथ ही एक बिजली के समान तुम पर दण्ड की आग बरसेगी फिर भी तुम गुनाह पर दिलेर हो सकोगे। यह ऐसी फ़िलास्फ़ी है जो किसी प्रकार टूट नहीं सकती। सोचो और ख़ूब सोचो कि तुम्हें जहां जहां दण्ड पाने का पूर्ण विश्वास प्राप्त है वहां तुम उस विश्वास के विरुद्ध कोई हरकत नहीं कर सकते। भला बताओ तुम आग में अपना हाथ डाल सकते हो, क्या तुम पहाड़ की चोटी से अपने आप को नीचे गिरा सकते हो? क्या तुम कुएं में गिर सकते हो? क्या तुम चलती हुई रेल के आगे लेट सकते हो? क्या तुम शेर के मुंह में अपना हाथ डाल सकते हो? क्या तुम पागल कुत्ते के आगे अपना पैर कर सकते हो? क्या तुम ऐसी जगह ठहर सकते हो जहां बड़े भयानक रूप में बिजली गिर रही हो? क्या तुम ऐसे घर से शीघ्र बाहर नहीं निकलते जहां शहतीर टूटने लगा है या भूकम्प से पृथ्वी धंसने लगी है? भला तुम में से कौन है जो एक ज़हरीले सांप को अपने पलंग पर देखे और शीघ्र कूद कर नीचे न आ जाए। भला एक व्यक्ति का नाम तो लो कि जब उस के कोठे को जिस के अन्दर वह सोता था आग लग जाए तो वह सब कुछ छोड़ कर बाहर न भाग जाए। तो अब बताओ ऐसा तुम क्यों करते हो और क्यों इन समस्त चीज़ों से अलग हो जाते हो परन्तु वे गुनाह की बातें जो मैंने अभी लिखी हैं उन से अलग नहीं होते। इस का क्या कारण है? तो याद रखो कि वह उत्तर जो एक बुद्धिमान पूरी सोच और बुद्धि के बाद दे सकता है वह यही है कि इन दोनों स्थितियों में ज्ञान का अन्तर है। अतः ख़ुदा के गुनाहों में प्रायः मनुष्य

का ज्ञान अधूरा है वे गुनाहों को बुरा तो जानते हैं परन्तु शेर और सांप की भांति नहीं समझते और गुप्त तौर पर उन के दिलों में यह विचार हैं कि यह दण्ड निश्चित नहीं हैं यहां तक कि ख़ुदा के अस्तित्त्व पर भी उन को सन्देह है कि वह है भी या नहीं और अगर है भी तो क्या ख़बर रूहों को मरने के बाद अनश्वरता (बक़ा) है या नहीं और यदि अनश्वरता है भी तो फिर क्या मालूम कि उन अपराधों का कुछ दण्ड भी है या नहीं निःसन्देह बहुत से लोगों के दिलों के अन्दर यही विचार छुपा हुआ मौजूद है। जिस पर उन्हें सूचना नहीं। परन्तु वे भय के समस्त स्थान जिन से वे बचते हैं जिस के मैं कुछ उदाहरण लिख चुका हूं उन के सम्बन्ध में सब को विश्वास है कि इन चीज़ों के निकट जाकर हम मर जाऐंगे। इसलिए उन के निकट नहीं जाते बल्कि ऐसी घातक वस्तुएं यदि संयोग से सामने भी आ जाएं तो चीख़ें मार कर उन से दूर भागते हैं तो मूल वास्तविकता यही है कि इन वस्तुओं को देखने के समय मनुष्य को अटल विश्वास है कि उन का इस्तेमाल मौत का कारण है परन्तु धार्मिक आदेशों में अटल विश्वास नहीं है बल्कि केवल गुमान है और उस जगह देखना है और यहां केवल कहानी है। अतः अनसुनी कहानियों से गुनाह हरगिज़ दूर नहीं हो सकते। मैं इस लिए तुम्हें सच सच कहता हूं कि यदि एक मसीह नहीं हज़ार मसीह भी सलीब पर मर जाएं तो वे तुम्हें वास्तविक मुक्ति हरगिज़ नहीं दे सकते। क्योंकि गुनाह से या पूर्ण भय छुड़ाता है या पूर्ण प्रेम। और मसीह का सलीब पर मरना प्रथम स्वयं झूठ और फिर उस को गुनाह का जोश बन्द करने से कोई सम्बन्ध नहीं। सोच लो कि यह दावा अंधकार में पड़ा हुआ है जिस पर न अनुभव गवाही दे सकता है और न मसीह की आत्महत्या की हरकत को दूसरों के गुनाह माफ किए जाने से कोई सम्बन्ध पाया जाता है। वास्तविक मुक्ति की फ़िलास्फी यही है कि

मनुष्य इसी संसार में गुनाह के नर्क (दोज़ख़) से मुक्ति पा जाए। परन्तु तुम सोच लो कि क्या तुम ऐसी कहानियों से गुनाह के नर्क से मुक्ति पा गए या कभी किसी ने इन व्यर्थ किस्सों से जिन में कुछ भी सच्चाई नहीं और जिन का वास्तविक मुक्ति के साथ कोई रिश्ता नहीं मुक्ति पाई है। पूरब और पश्चिम में तलाश करो तुम्हें कभी ऐसे लोग नहीं मिलेंगे जो कभी इन किस्सों से उस वास्तविक पवित्रता तक पहुंच गए हों जिस से ख़ुदा दिखाई दे जाता है। और जिस से न केवल गुनाह से विमुखता होती है स्वर्ग के रूप और सच्चाई के आन्नद आरम्भ हो जाते हैं और मनुष्य की रूह पानी की तरह पिघल कर ख़ुदा की चौखट पर गिर जाती है और आकाश से एक प्रकाश उतरता है और कामवासना सम्बन्धी समस्त अंधकार को दूर कर देता है। इसी प्रकार जब कि तुम प्रकाशमान दिन में चारों ओर ख़िड़कियां खोल दो तो यह प्राकृतिक नियम तुम्हें दिखाई दे जाएगा कि तुरन्त सूर्य का प्रकाश तुम्हारे अन्दर आ जाएगा। परन्तु यदि तुम अपनी खिड़कियां बन्द रखोगे तो केवल किस्से या कहानी से वह प्रकाश तुम्हारे अन्दर नहीं आ सकता तुम्हें प्रकाश लेने के लिए यह अवश्य करना पड़ेगा कि अपने स्थान से उठो और खिड़कियां खोल दो तब प्रकाश स्वयं तुम्हारे अन्दर आ जाएगा और तुम्हारे घर को प्रकाशमान कर देगा क्या कोई केवल पानी की कल्पना से अपनी प्यास बुझा सकता है? बल्कि उसको चाहिए कि गिरते पड़ते पानी के झरने पर पहुंचे और उस पर अपने होंठ रख दे तब उस मधुर जल से सैराब हो जाएगा।

तो वह पानी जिस से तुम सैराब (तृप्त) हो जाओगे और गुनाह की जलन और तपन जाती रहेगी वह विश्वास है। आकाश के नीचे गुनाह से पवित्र होने के लिए इस के अतिरिक्त कोई भी बहाना नहीं, कोई सलीब नहीं जो तुम्हें गुनाह से छुड़ा सके कोई ख़ून(क़त्ल) नहीं जो तुम्हें काम

वासना सम्बन्धी भावनाओं से रोक सके। इन बातों का वास्तविक मुक्ति से कोई रिश्ता और सम्बन्ध नहीं। वास्तविकताओं को समझो, सच्चाइयों पर विचार करो और जिस प्रकार संसार की वस्तुओं को परखते हो उस को भी परखो तब तुम्हें शीघ्र समझ आ जाएगा कि सच्चे विश्वास के बिना कोई प्रकाश नहीं जो तुम्हें कामवासना के अंधकार से छुड़ा सके। और पूर्ण प्रतिभा के शुद्ध पानी के बिना तुम्हारी आन्तरिक गन्दगियों को कोई भी धो नहीं सकता और सच को देखने के मधुर पानी के बिना तुम्हारी जलन एवं तपन कभी दूर नहीं हो सकती। झूठा है वह व्यक्ति जो और और उपाय तुम्हें बताता है और मूर्ख है वह इन्सान जो और प्रकार का इलाज करना चाहता है। वे लोग तुम्हें प्रकाश नहीं दे सकते बल्कि और भी अंधकार के गढ़े में डालते हैं और तुम्हें मधुर पानी नहीं देते बल्कि वे और भी जलन और तपन अधिक करते हैं। कोई ख़ून (क़त्ल) तुम्हें लाभ नहीं पहुँचा सकता परन्तु वह ख़ून जो विश्वास के अन्त से स्वयं तुम्हारे अन्दर पैदा हो और कोई सलीब तुम्हें छुड़ा नहीं सकती परन्तु सन्मार्ग की सलीब अर्थात सच्चाई पर सब्र करना। अतः तुम आंखें खोलो और देखो कि क्या यह सच नहीं कि तुम प्रकाश से ही देख सकते हो न किसी अन्य वस्तु से और केवल सीधे मार्ग से अभीष्ट मंज़िल तक पहुँच सकते हो न किसी अन्य मार्ग से। संसार की वस्तुएं तुम से निकट हैं और धर्म की चीज़ें दूर। तो जो निकट है उन्हीं पर विचार करो और उनका कानून समझ लो और फिर दूर को....उस पर अनुमान लगा लो। क्योंकि वही एक है जिसने यह दोनों कानून बनाए हैं। तुम में से कौन है जो आंखों के बिना देख सकता है या कानों के बिना सुन सकता है या ज़ुबान के बिना बोल सकता है? फिर तुम क्यों उसी कानून से रूहानी बातों में लाभ नहीं उठाते। तुम आंखों के होते हुए किसी ऐसे स्थान पर

ठहर सकते हो जो अथाह गढ़े के निकट है या कानों के होते हुए तुम ऐसी आवाज़ से सतर्क नहीं हो सकते जो तुम्हें चोरों के आने की सूचना देती है या ज़ुबान के होते हुए जो तुम्हें कड़वे और मीठे में अन्तर दिखाती है फिर भी कड़वी और ज़हरीली वस्तुएं खा सकते हो जो तुम्हारी ज़ुबान को काटें और तुम्हारे आमाशय में ख़राबी पैदा करें और उल्टियां लाएं और शरीर को सज़ा दें और अन्त में मार दें। तो तुम इन्हीं अंगों से समझ लो कि तुम रूहानी तौर पर भी रूहानी जीवन के लिए इस बात के मुहताज हो कि तुम्हें एक प्रकाश मिले जो बुरे मार्गों की बुराई तुम्हें दिखाई दे और तुम्हें एक आवाज़ मिले जो चोरों और डाकुओं के मार्ग से तुम्हें अलग करे और तुम्हें एक स्वाद मिले जिससे तुम कड़वी, मीठी तथा विष (ज़हर) और विषनाशक में अन्तर कर सको। अतः जिन बातों को मरने से बचने के लिए तुम्हें माँगना चाहिए वे यही हैं। यह किसी प्रकार संभव नहीं कि तुम प्रकाश प्राप्त किए बिना केवल अंधे रह कर फिर किसी के ख़ून से मुक्ति पा जाओ। मुक्ति कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो इस संसार के बाद मिलेगी। सच्ची और निश्चित मुक्ति इसी संसार में मिलती है। वह एक प्रकाश है जो दिलों पर उतरता है और दिखाई देता है कि कौन से तबाही के गढ़े हैं। सच्चाई और हिक्मत के मार्ग पर चलो कि इस से ख़ुदा को पाओगे और अपने दिलों में गर्मी पैदा करो ताकि सच्चाई की ओर हरकत पैदा कर सको। दुर्भाग्यशाली है वह दिल जो ठण्डा पड़ा है और अभागी है वह तबियत जो शोकग्रस्त है और मुर्दा है वह अन्तरात्मा जिसमें चमक नहीं। तो तुम उस डोल से कम न रहो जो कुएं में खाली गिरता और भर कर निकलता है और उस छलनी की विशेषता ग्रहण न करो जिसमें कुछ भी पानी नहीं ठहर सकता, एक मार्ग से आता और दूसरे मार्ग से चला जाता हैं। कोशिश करो कि स्वस्थ हो

जाओ और वह संसार की चाहत की तपन की ज़हरीली गर्मी दूर हो जाए जिसके कारण न आंखों में रोशनी है न कान अच्छी तरह से सुन सकते हैं न जीभ का स्वाद ठीक है न हाथों में ज़ोर और न पैरों में शक्ति है। एक सम्बन्ध को काटो ताकि दूसरा सम्बन्ध पैदा हो। एक ओर से दिल को रोको ताकि दूसरी ओर से दिल को मार्ग मिल जाए। पृथ्वी का गन्दा कीड़ा फैंक दो ताकि आकाश का चमकता हीरा तुम्हें प्रदान किया जाए और अपने प्रारम्भ की ओर लौटो वही प्रारम्भिक स्थान जब आदम ख़ुदाई रूह से जीवित किया गया था ताकि तुम्हें समस्त वस्तुओं पर बादशाहत मिले जैसा कि तुम्हारे पिता को मिली।

दिन गुज़र गया अस्त्र का समय है चार बजे के क़रीब, रात हुआ चाहती है सूर्य अस्त होने को है अब यदि देखना है तो देख लो फिर क्या देखोगे। इस से पहले कि कूच करो अपने खाने के लिए उत्तम चीज़ें आगे भेजो न कि पत्थर और ईंट और पहनने के लिए लिबास भेजो न कि कांटे और कूड़ा कर्कट। वह ख़ुदा जो बच्चे के जन्म लेने से पहले स्तनों में दूध डालता है। उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारे ही युग में तुम्हारे ही देशों में....एक भेजा है ताकि मां के समान अपनी छातियों से तुम्हें दूध पिलाए। वही तुम्हें विश्वास का दूध पिलाएगा जो सूर्य से अधिक सफेद और समस्त शराबों से अधिक तुम्हें मस्ती प्रदान करता है। तो यदि तुम जीवित पैदा हुए हो मुर्दा नहीं तो आओ उस स्तन की ओर दौड़ो कि तुम उस से ताज़ा दूध पियोगे। वह दूध अपने बर्तनों से फैंक दो जो ताज़ा नहीं है तथा गन्दी हवाओं ने उसे दुर्गन्धयुक्त कर दिया है और उस में कीटाणु चल रहे हैं जिन को तुम देख नहीं सकते वह तुम्हें रौशन नहीं कर सकता बल्कि अन्दर प्रवेश करते ही तबीयत को बिगाड़ देगा क्योंकि अब वह दूध नहीं बल्कि एक ज़हर है। प्रत्येक सफेदी को प्रशंसा की

दृष्टि से न देखो क्योंकि कुछ सफेद से कुछ काले ही अच्छे होते हैं। जैसा कि काला बाल जवानी की शक्ति को इंगित करता है और सफेद बाल निर्बलता, कमज़ोरी और बुढ़ापे को। इसी प्रकार दिखावे की सफेदी और नेकी की प्रदर्शनी किसी काम की नहीं। इस से गुनाहगार साधारण तौर तरीकों रखाव वाला अच्छा है कि जो धोखे से अपने गुनाह को नहीं छुपाता। अतः मैं सच सच कहता हूं कि वह ख़ुदा की क्षमा से अधिक करीब है। उन चीज़ों पर भरोसा मत करो जो निश्चित नहीं जिन के साथ कोई सच्चा प्रकाश नहीं जिन के नीचे कोई पवित्र फ़िलास्फी नहीं कि वे सब तबाही के मार्ग हैं। तुम अपने दिलों की इच्छाओं का अनुमान करो कि वे क्या चीज़ चाहते हैं और वे किस प्रकार से समझ सकते हैं कि इस प्रकार हम बुराई से अलग हो सकते हैं।

किस इलाज पर उन की अन्तरात्मा बोलती है कि यह हमारे लिए पर्याप्त होगा क्या कोई दिल इस बात को स्वीकार करता है कि मसीह का ख़ून उस को गुनाह करने से भय दिलाए बल्कि अनुभव बता रहे हैं कि और भी दिलेर करता है। क्योंकि मसीह के ख़ून पर भरोसा करने वाला जानता है कि उस के गुनाह का फिदिया अदा हो चुका है परन्तु गुनाह के ज़हर का ज्ञान जिसे दिया जाएगा वह किसी प्रकार गुनाह नहीं कर सकता क्योंकि वह उस में अपनी मौत देखता है। तो ख़ुदा की ओर से भेजा गया है जो ऐसे ज्ञान तक तुम्हें पहुंचाना चाहता है जिस से तुम्हारे दिल ख़ुदा को देख लें तथा बुराई के ज़हर को देख लें। तब तुम स्वयं गुनाह से भागोगे जिस प्रकार कि एक इन्सान शेर से भागता है। तो इस पुस्तक का आवश्यक कर्त्तव्य यही होगा कि उस की शिक्षा और उस के निशानों को दुनिया फैलाए ताकि जो लोग सलीब और मसीह के ख़ून में मुक्ति ढूढंते हैं वे वास्तविक मुक्ति के झरने को देख लें। वास्तविक मुक्ति

उन पानियों में नहीं है जिन में एक भाग पानी और बीस भाग कीचड़ और गन्दगी। दिलों को धोने वाला पानी आकाश से अपने समय में उतरता है जो नहर उस से पूर्ण रूप से भरी हुई चलती है वह कीचड़ और मैले पानी से बहुत दूर होती है और लोग उस का स्वच्छ और अच्छा पानी इस्तेमाल करते हैं, किन्तु वह नहर जो सूखी हुई है और कुछ थोड़ा पानी उस में खड़ा है और वह भी बदबूदार, उस में वह शुद्धता और स्वच्छता नहीं रह सकती तथा उस में बहुत सा कीचड़ मिल जाता है कई जानवर उस में मल मूत्र करते हैं, इसी प्रकार जिस दिल को ख़ुदा का ज्ञान दिया गया है और विश्वास प्रदान किया गया है। वह उस पूर्ण रूप से भरी हुई नहर के समान है जो सब खेतों को सींचती चली जाती है और उस का स्वच्छ और ठण्डा पानी दिलों को आराम देता तथा कलेजों की जलन को दूर करता है वह न केवल स्वयं पवित्र है बल्कि पवित्र भी करता है क्योंकि वह दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता प्रदान करता है जो दिलों के ज़ंग दूर करती है। गुनाह से नफरत दिलाती है परन्तु वह जो थोड़े पानी के समान है जिस में कीचड़ मिला हुआ है वह सृष्टि (मख़लूक) को कुछ लाभ नहीं पहुंचा सकती और न स्वयं को स्वच्छ कर सकती। तो अब समय है कि उठो और विश्वास का पानी तलाश करो कि तुम्हें मिलेगा तथा विश्वास की अधिकता के साथ एक दरिया के समान बह निकलो। प्रत्येक सन्देह और शंका की गन्दगी से पवित्र हो कर गुनाह से दूर हो जाओ। यही पानी है जो गुनाह के निशानों को धोएगा और तुम्हारे सीने की तख़्ती को साफ कर के ख़ुदा के निशानों के लिए तैयार कर देगा। तुम कामवासना सम्बन्धी अक्षरों का उस (दिल की तख़्ती) से किसी प्रकार मिटा नहीं सकते जब तक कि विश्वास के शुद्ध पानी से उसे धो न डालो। संकल्प करो ताकि तुम्हें सामर्थ्य दी जाए ढूंढो ताकि तुम्हारे

लिए उपलब्ध किया जाए, दिलों को नर्म करो ताकि उन बातों को समझ सको क्योंकि संभव नहीं कि कठोर दिल वास्तविकताओं को समझ सके। क्या तुम सोचते हो कि तुम उस मार्ग के बिना ख़ुदा की श्रेष्ठता तुम्हारे दिल में स्थापित हो और उस जीवित ख़ुदा का प्रताप तुम पर खुले और उस की सत्ता तुम पर प्रकट हो और दिल विश्वास के प्रकाश से भर जाए किसी अन्य उपाय से तुम गुनाह से सच्ची नफरत कर सको, हरगिज़ नहीं एक ही मार्ग और एक ही ख़ुदा तथा एक ही कानून।

(रीव्यू आफ रिलीजन्ज़ उर्दू अंक 1 पृष्ठ 9 से 30 प्रकाशित
जनवरी 1902 ई से उदधृत)